# पशुपालन उद्योग पर
# खुरपका का खतरा

प्रवीण कुमार

*चीनी, भारतीय व अन्य एशियाई रेस्तरांओं के लिए अवैध रूप से आयात किया जाने वाला मांस इंग्लैण्ड में खुरपका (फुट एण्ड माउथ) रोग का स्रोत माना जा रहा है।*

ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों में पालतू पशु खुरपका रोग की जकड़ में हैं और इस सम्बंध में भारत संदेह के दायरे में है। राजस्थान और हरियाणा में खुरपका रोग के प्रकोप की खबरें मिलने के बाद जॉर्डन, सऊदी अरब और मिस्र ने भारत से मांस के आयात पर प्रतिबंध लगाने की पहल की थी। मिस्र भारतीय मांस का सबसे बड़ा आयातक है और वह प्रति वर्ष 14,000 टन मांस का आयात करता है।

इस रोग का सबसे ज़्यादा असर ब्रिटेन पर हुआ है। वहां 27 मार्च तक 682 मामले सामने आ चुके थे। इस रोग को फैलने से रोकने का सबसे कारगर तरीका रोग ग्रस्त पशुओं का कत्ल कर दिया जाना है। एक अनुमान के मुताबिक रोग को आगे फैलने से रोकने के लिए शायद 10 लाख पशुओं को मारना पड़ा हो। पिछली बार ब्रिटेन में 1967-68 में इस रोग की महामारी के दौरान कई हज़ार पशुओं का कत्ल किया गया था। इस बार भी 21 मार्च तक 2 लाख 70 हज़ार पशु मारे जा चुके थे।

वैसे तो इस रोग के लिए टीका उपलब्ध है किन्तु समस्त जोखिमग्रस्त पशुओं को टीका लगाने की लागत बहुत ज़्यादा है - लगभग 5 पाउण्ड प्रति पशु। इसके अलावा इस टीके से बीमारी का सफाया भी नहीं होगा और शायद इसकी वजह से निर्यात बाज़ार को रोगमुक्त स्थिति में लाने में विलम्ब भी हो सकता है। लिहाज़ा रोग के सम्पर्क में आए समस्त पशुओं को खत्म करना ही रोकथाम का एकमात्र कारगर तरीका माना जा रहा है। सबसे अधिक प्रभावित दो क्षेत्रों - दक्षिण पश्चिम स्कॉटलैण्ड और कुम्ब्रिया में रोग के प्रकोप स्थलों से 3.5 किलोमीटर की परिधि में समस्त पालतू भेड़ें व सुअर कत्ल कर दिए जाने की तैयारी की गई।

इन देशों में ग्रामीण उद्योग व पर्यटन को होने वाले नुकसान को कम करने हेतु सरकारी अभियान भी शुरू किए गए। अखबारों में विज्ञापनों और विशेष टेलीफोन लाइनों पर लोगों को यह सूचना दी गई कि वे देश के किन हिस्सों में सुरक्षित रूप से जा सकते हैं। *द गार्जियन* अखबार ने 28 मार्च के अंक में आशंका व्यक्त की थी कि खुरपका रोग के चलते शायद आम चुनावों की तारीख 3 मई से आगे बढ़ा दी जाए।

ब्रिटेन के कृषि व मत्स्यपालन मंत्रालय में व्यापक रोग वैज्ञानिक प्रोफेसर एण्डर्सन के मुताबिक इस रोग के मई में अपने चरम पर होने और सम्भवत: अगस्त तक जारी रहेगा। 13 मार्च को फ्रांस के मेयन क्षेत्र से भी खुरपका रोग के समाचार मिले। इस रोग के मामले उन फार्मों के आसपास देखे गए जहां फरवरी में ब्रिटेन से भेड़ें आयात की गई थीं। 21 मार्च को नीदरलैण्ड से भी कई मामले रिपोर्ट किए गए।

**ब्रिटिश गायों में बी.एस.इ. या 'मैड कॉउ' रोग के पुष्ट मामले**